(1)

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएं — वैदिक संस्कृत का प्राचीनतम प्रामाणिक ग्रन्थ ऋग्वेद है। ऋग्वेद की प्रौढ़ भाषा से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उससे पूर्व भी भाषा के विकास की एक सुदीर्घ परम्परा रही होगी, जिसकी परिणति ऋग्वेद की भाषा में हुई होगी। कोई भी भाषा अचानक ही इतने उत्कर्ष पर नहीं पहुँच सकती।

जहाँ भारतीय विद्वान वैदिक काल को अधिक से अधिक प्राचीन घोषित करने के पक्ष में हैं, वहीं पाश्चात्य विद्वान बौद्ध काल (563 ई०पू० - 483 ई०पू०) से एक हजार वर्ष से अधिक प्राचीन मानने के पक्ष में नहीं हैं। भारतीय विद्वानों ने सिन्धु घाटी की सभ्यता के प्रमाणों के आधार पर इसे 3250 ई०पू० से 2750 ई०पू० तक माना है। इस प्रकार वैदिक काल को मोटे तौर पर ई०पू० 1500 से ही अभी माना जा रहा है। भारतीय आर्यभाषाओं के विकास को निम्नलिखित तीन कालखण्डों में विभाजित किया गया है:—

(क) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल (1500 ई०पू० - 500 ई०पू०)
(ख) मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल (500 ई०पू० - 1000 ई०)
(ग) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल (1000 से अब तक)

(क) प्राचीन आर्यभाषा काल :→ इसे वैदिक प्राचीन संस्कृत, वैदिकी, छान्दस भी कहते हैं। वैदिक संस्कृत का रूप वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। ऋग्वेद भारतीय आर्यभाषा का प्राचीनतम ग्रन्थ है। ऋग्वेद की तरह सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद भी संहिता ग्रन्थ हैं अर्थात इसमें सुदीर्घ काल में रचित ऋचाओं को एकत्र संकलित किया गया है। ऋग्वेद के मन्त्रों की भाषा भिन्नता को देखकर यह स्पष्ट होता है कि इसकी रचना कई स्थानों पर और कई शताब्दियों में हुई है। ऋग्वेद के दस मण्डलों में प्रथम और दशम में संकलित ऋचाओं की भाषा अपेक्षाकृत परवर्तीकाल की है। बीच के आठ मण्डलों की भाषा प्राचीन ईरानी भाषा 'अवेस्ता' के निकट है जिसमें पारसियों का धर्म ग्रन्थ "जेन्द अवेस्ता" लिखा गया। वैदिक साहित्य में संहिताओं के बाद ब्राह्मण ग्रन्थ आते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना मुख्य रूप से गद्य में हुई है। ब्राह्मण ग्रन्थों के बाद 'आरण्यक' आते हैं

Scanned by CamScanner

जो ब्राह्मण ग्रन्थों के परिशिष्ट मात्र हैं। आरण्यकों के बाद उपनिषदों का समय आता है

वैदिक संस्कृत साहित्यिक भाषा थी, जिसमें उच्चस्तरीय साहित्य की सृष्टि हुई। वैदिक संस्कृत का एक सिरा लोक-जीवन से भी अवश्य जुड़ा रहा होगा, उसका बोलचाल का व्यवहारिक रूप भी अवश्य ही प्रचलित रहा होगा। बोली से सम्बद्ध होने के कारण ही वैदिक संस्कृत भी अपनी प्रकृति में बहुत कुछ स्वच्छन्द है, जिसके कारण शब्दों के रूप सर्वत्र नियमित नहीं हैं। कहीं-२ रूपों में अनेकरूपता मिलती है। वैदिक संस्कृत की निम्न विशेषतायें दृष्टिगोचर होती हैं —

(1) वैदिक भाषा श्लिष्ट योगात्मक भाषा थी। (विभक्तियों के प्रयोग से)
(2) इसकी रूप रचना में विविधता और जटिलता है। उदाहरण के लिए 'देव' के प्रथमा द्विवचन में देवौ और देवा रूप बनते थे जिनमें से लौकिक संस्कृत में केवल देवौ रह गया। इसी प्रकार प्रथमा बहुवचन में देवाः और देवासः दो रूप बनते थे जिनमें से संस्कृत में देवाः ही रह गया।
(3) वैदिक संस्कृत में शब्द दो प्रकार के थे — स्वरांत और व्यंजनात। इन रूपों की निष्पत्ति प्रत्ययों के साहचर्य से होती थी।
(4) वैदिक संस्कृत में कुल ध्वनियों की संख्या 52 थी।
(5) वैदिक संस्कृत में ळ और ळह ध्वनियाँ प्रचलित थी जोकि लौकिक संस्कृत में नहीं रही।
(6) इसमें स्वरों में ऋ तथा ऌ का प्रयोग मिलता है, संस्कृत में यह लुप्त प्रायः है।
(7) धातु रूपों में 'लेट् लकार' का प्रयोग होता था जो लौकिक संस्कृत में समाप्त हो गया।
(8) वैदिक भाषा में संगीतात्मक सुराघात की प्रमुखता थी, लौकिक संस्कृत में बलाघातात्मक स्वर हो गया।
(9) वैदिक भाषा में उपसर्ग धातु से अलग भी प्रयुक्त हो सकते थे। यथा - "अभि यज्ञं गृणीहि नः"।
(10) वैदिक संस्कृत में तीन लिंग, तीन वचन तथा दो वाच्य थे।
(11) इसमें स्वरों के ह्रस्व व दीर्घ रूपों के साथ 'प्लुत' का प्रयोग भी होता था जो संस्कृत में समाप्त प्रायः हो गया।

Scanned by CamScanner

(2) इसमें समास रचना की प्रवृत्ति भी थी। इसमें चार समास- द्वन्द्व, कर्मधारय, तत्पुरुष और बहुव्रीहि का प्रयोग होता था।

(3) वैदिक संस्कृत में 11 लकार मिलते हैं। इस भाषा में सम्भावना और आज्ञा के लिए लट् लकार भी है जैसे भवति, पतति आदि। इसमें लुङ् लकार का प्रयोग बहुत अधिक मिलता है। वैदिक भाषा में इसका प्रयोग 5518 बार हुआ है।

(4) वैदिक संस्कृत में शब्दों के अर्थ लौकिक संस्कृत से अलग हैं। यथा —

| शब्द | वैदिक अर्थ | लौकिक अर्थ |
|---|---|---|
| वध | कोई भयंकर शस्त्र | मार डालना |
| न | इव (समान) | नहीं |
| अरि | ईश्वर, निवास स्थान | शत्रु |
| क्षति | मनुष्य, गृह | पृथ्वी |

(5) वैदिक संस्कृत में आत्मनेपद तथा परस्मैपद मिलते हैं।

(6) वैदिक संस्कृत में सर्वनाम प्राप्त होते हैं लेकिन लौकिक संस्कृत में ये लुप्त हो गए हैं।

(7) वैदिक संस्कृत में मात्र वर्णिक छन्द मिलते हैं जबकि लौकिक संस्कृत में वर्णिक और मात्रिक दोनों प्रकार के छन्द मिलते हैं। (8) सन्धि नियमों में प्रयाप्त शिथिलता थी।

निष्कर्ष → निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैदिक संस्कृत में प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का रूप मिलता है। वैदिक भाषा को जीवित रखने के लिए संगीत पाठ बनाए गए। किसी जमाने में वैदिक संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। कुरु प्रदेश और सप्त सिंधु के प्रदेश में इस भाषा का अधिक प्रचार-प्रसार हुआ। आर्यलोगों ने इस भाषा को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसी जमाने में पंजाब और हरियाना वैदिक संस्कृत के महत्वपूर्ण केन्द्र थे।

—

Scanned by CamScanner